पागल की डायरी

लू शुन (1880-1936)

इस चीनी कथाकार की प्रसिद्धि एक क्रांतिकारी लेखक के रूप में रही है । लू शुन महान विचारक, राजनीतिक टिप्पणीकार और आधुनिक चीनी साहित्य के प्रणेता माने जाते हैं । 'पागल की डायरी' आधुनिक चीनी साहित्य के इतिहास में संभवत: पहली प्रभावशाली कहानी है । यह कहानी पुरातनपंथी समाज के यथार्थ का निर्मम विश्लेषण करती है । लू शुन का व्यक्तित्व और कृतित्व व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध प्रतिपादित करता है ।

दो भाई थे । उनके नाम नहीं बताऊँगा । मेरे स्कूल के दिनों के साथी थे । दोनों से ही अच्छा मेल-जोल था । परंतु कई वर्षों तक मेल-मुलाकात न हो सकी और संपर्क टूट गया । कुछ महीने पहले सुना कि उनमें से एक बहुत बीमार है । मैं अपने गाँव लौट रहा था, सोचा रास्ते में उन लोगों के यहाँ भी होता चलूँ । उनके घर गया तो एक ही भाई से मुलाकात हुई । उसने बताया कि छोटा भाई बीमार था ।

मित्र ने कहा, "तुम्हारे दिल में कितना स्नेह है । हम लोगों का ख्याल कर इतनी दूर से मिलने के लिए आए हो । अब छोटे भाई की तबीयत ठीक है । उसे सरकारी नौकरी मिल गई है, वहीं गया है ।" बड़े भाई ने हँसते-हँसते दो मोटी-मोटी जिल्दों में लिखी डायरी मुझे दिखाई और बोला अगर कोई इस डायरी को पढ़ ले तो भाई की बीमारी का रहस्य समझ जाएगा और अपने पुराने दोस्त को दिखा देने में हर्ज क्या है । मैं डायरी ले आया और उसे पढ़ डाला । समझ गया कि बेचारा नौजवान अजीब आतंक और मानसिक यंत्रणा से पीड़ित था । लिखावट बहुत उलझी-उलझी और असंबद्ध थी । कुछ बेसिरपैर के आरोप भी थे । पृष्ठों पर तारीखें नहीं थीं । जगह-जगह स्याही के रंग और लिखावट के अंतर से अनुमान हो सकता था कि ये जब-तब

आगे-पीछे लिखी गई चीजें होंगी । कुछ बातें संबद्ध भी जान पड़ती थीं और समझ में आ जाती थीं । चिकित्सा विज्ञान में खोज की दृष्टि से उपयोगी हो सकने वाले कुछ पृष्ठों की मैंने नकल कर ली । डायरी की एक भी बेतुकी बात को मैंने नहीं बदला, बस नाम बदल दिए हैं, हालाँकि दूर देहात के उन लोगों को जानता भी कौन है । शीर्षक स्वयं लेखक का ही दिया हुआ है । यह दिमाग ठिकाने आ जाने पर ही दिया होगा । मैंने उसे नहीं बदला ।

1

आज रात चाँद खूब उजला है ।

तीस वर्ष हो गए, चाँद को नहीं देख पाया । इसलिए आज चाँदनी में मन में उत्साह उमड़ता जा रहा है । आज अनुभव कर रहा हूँ कि बीते तीस वर्ष अंधकार में ही बिता दिए ; परंतु अब बहुत चौकस रहना होगा । अवश्य कोई बात है । वरना चाओ परिवार का कुत्ता भला दो बार मेरी ओर क्यों घूरता ?

हाँ, समझता हूँ, मेरी आशंका अकारण नहीं है ।

2

आज अँधेरी रात है । चाँद का कहीं पता नहीं । लक्षण शुभ नहीं है । आज सुबह बाहर गया तो बहुत सावधान था । चाओ साहब ने मेरी ओर ऐसे देखा मानो मुझे देखकर डर गए हों, मानो मेरा खून करना चाहते हों । सात-आठ दूसरे लोग भी थे । एक-दूसरे से फुसफुसाकर मेरी बात कर रहे थे और मेरी नजर से बचने की कोशिश कर रहे थे । जितने लोग मिले सबका वही हाल था । उनमें जो सबसे डरावना था, मुझे देखते ही दाँत निकालकर हँसने लगा । मैं सिर से पाँव तक काँप उठा । समझ गया, इन लोगों ने सब तैयारी कर ली है ।

मैं डरा नहीं, अपनी राह चलता गया । कुछ बच्चे आगे-आगे जा रहे थे । वे भी मेरी ही बात कर रहे थे । उनकी नजरें चाओ साहब की ही तरह थीं और चेहरे डर से जर्द पड़ गए थे । सोच रहा था, मैंने इन लड़कों का क्या बिगाड़ा है । ये क्यों मुझसे खफा हैं ? रहा नहीं गया तो मैं पुकार उठा, "क्यों क्या बात है ?" मगर तब वे सब भाग गए ।

कुछ समझ नहीं पाता कि चाओ साहब से मेरा क्या झगड़ा है । राह चलते लोगों का मैंने कब क्या बिगाड़ा है ? बस इतना याद है कि बीस वर्ष पहले कू च्यू[1] साहब की वर्षों पुरानी बही पर मेरा पाँव पड़ गया था और कू साहब बहुत नाराज हो गए थे । पर कू का चाओ से क्या मतलब ? एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं । हो सकता है, चाओ ने इस बारे में किसी से सुन लिया हो और मुझसे उसका बदला लेने की ठान ली हो । वह राह चलते लोगों को मेरे विरुद्ध भड़काते रहते हैं ; पर इन बच्चों को इस सबसे क्या मतलब ? ये लोग तो तब पैदा भी नहीं हुए थे । ये लोग मुझे ऐसे घूर-घूर कर क्यों देखते हैं ? मानो डरे हुए हों, मेरा खून कर देने की घात में हों । बहुत घबराहट होती है । क्या करूँ ? अजब परेशानी है ।

मैं समझता हूँ । इन लोगों ने यह सब जरूर अपने माँ-बाप से सीख लिया होगा !

3

रात में नींद नहीं आती । बिना अच्छी तरह सोचे-विचारे कोई भी बात समझ में नहीं आ सकती ।

इन लोगों को देखो--कई लोगों को मजिस्ट्रेट कठघरे में बंद करवा चुका है ; बहुत से लोग आस-पास के अमीर-उमरावों से मार खा चुके हैं ; बहुतों की बीवियों को सरकारी अमले के लोग छीन ले गए हैं ; कइयों के माँ-बाप साहूकारों से परेशान होकर गले में फाँसी लगाकर आत्महत्या कर चुके हैं । पर इन सब बातों को याद करके भी इन लोगों की आँखों में कभी इतना खून नहीं उतरा होगा, इन्हें कभी इतना गुस्सा नहीं आया होगा जितना कि कल देखने में आया ।

उस औरत को क्या कहूँ ? कल गली में अपने लड़के को पीट-पीट कर चीख रही थी, "बदमाश कहीं का ! तेरी चमड़ी उधेड़ दूँगी ! तेरी बोटी-बोटी काट डालूँगी ! तूने मेरा कलेजा जला दिया !" वह बार-बार मेरी तरफ देखने लगती थी । मैं काँप उठा । बड़ी घबराहट हुई । क्रूर चेहरे, लंबे-लंबे दाँतों वाले लोग हँसने लगे । बुजुर्ग छन झट आगे बढ़ आया और मुझे पकड़कर घर ले आया ।

छन मुझे घर लिवा लाया । सब लोग ऐसे ब्रन गए मानो पहचानते ही न हों । मैंने उनकी आँखें पहचानीं । उनकी नजरों में भी वही गली के लोगों वाली बात थी । मैं अध्ययन कक्ष में आ गया तो उन्होंने झट दरवाजा बंद कर दिया और साँकल लगा दी, जैसे मुर्गी या बत्तख को दरबे में बंद कर दिया गया हो । मैं और भी परेशान हो गया ।

कुछ दिन पहले की बात है । शिशु-भेड़िया गाँव से हमारा एक असामी फसल के चौपट होने की खबर देने आया था । उसने मेरे बड़े भाई को बताया कि गाँव के सब लोगों ने मिलकर देहात के एक बदनाम दिलेर गुंडे को घेर लिया और मार-मार कर उसका काम तमाम कर दिया । कुछ लोगों ने उसका सीना फाड़कर दिल और कलेजा निकाल लिया, उन्हें तेल में तला और बाँटकर खा गए कि उनका भी हौसला बढ़ जाए । मुझसे रहा नहीं गया और मैं बोल पड़ा । भैया और असामी दोनों मुझे घूरने लगे । बिलकुल ऐसे ही घूर रहे थे जैसे आज सड़क पर लोगों की नजरें ।

यह सब सोचकर एड़ी से चोटी तक सारा बदन सिहर उठता है । ये लोग आदमखोर हैं, ये मुझे भी खा सकते हैं ।

याद आया, वह औरत कह रही थी, "तेरी बोटी-बोटी काट डालूँगी !" क्रूर चेहरों पर लंबे दाँत निकाले लोग हँस रहे थे, और उस असामी ने जो कहानी सुनाई,.....ये सब गुप्त संकेत हैं । इन लोगों की बातों में कितना विष भरा है । इनकी हँसी खंजर की धार की तरह काटती है । इनके ये लंबे-लंबे सफेद दाँत आदमियों के हाड़-मांस चबा-चबा कर चमक गए हैं । ये सब आदमखोर हैं ।

मैं जानता हूँ, यद्यपि मैं कोई बुरा आदमी नहीं, पर जब से कू साहब की बही पर मेरा पाँव पड़ा है, लोग मेरे पीछे पड़ गए हैं । इन लोगों के मन में ऐसी गाँठ पड़ गई है कि मैं कुछ कर ही नहीं सकता । ये लोग किसी से एक बार बिगड़ जाते हैं तो उसे बदमाश समझ लेते हैं । खूब याद है, बड़े भाई मुझे निबंध लिखना सिखाया करते थे । कोई आदमी कितना ही भला रहा हो, यदि मैं उसके दोष दिखा देता तो उन्हें बहुत पसंद आता था । साथ ही यदि मैं किसी के दोषों पर पर्दा डाल देता तो कह बैठते, "बहुत खूब ! यह तुम्हारी नई सूझ है ।" इन लोगों के मन की थाह कैसे पा सकता हूँ – खासकर जब ये लोग किसी को खा जाने की बात सोच रहे हों ।

बहुत गहराई से विचार किए बिना कुछ समझ पाना कठिन है । याद है कि आदिम लोग प्राय: नर-मांस खाते थे, पर बिलकुल ठीक याद नहीं पड़ रहा । इस विषय में इतिहास की पुस्तकों में भी खोज करने का यत्न किया, कहीं क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिला । 'सद्‌गुण और सदाचार' यही शब्द सभी पृष्ठों पर मिलते हैं । नींद किसी तरह नहीं आ रही थी, इसलिए बहुत ध्यान से आधी रात तक पढ़ता रहा । जहाँ-तहाँ वास्तविक अभिप्राय समझ में आने लगा । सारी किताब में सब जगह एक ही बात थी, "मनुष्य को खा जाओ" ।

पुस्तक में लिखी ये सारी बातें, उस असामी की सारी बातें, मेरी ओर कैसे घूर रही हैं, गूढ़ मुस्कराहट से !

मैं भी तो मनुष्य हूँ और ये लोग मुझे खा जाना चाहते हैं !

4

सुबह कुछ देर से चुपचाप बैठा था । छन खाना लेकर कमरे में आया । एक कटोरे में सब्जी थी, दूसरे में भाप से पकाई हुई मछली । मछली की आँखें पथराई हुई सफेद थीं, मुँह खुला हुआ था, जैसे कोई भूखा आदमखोर मुँह खोले हुए हो । मैं खाने लगा । ग्रास निगलता जा रहा था । नहीं मालूम मछली खा रहा था या नर-मांस । सब उगल डाला ।

मैंने छन से कहा, "छन दादा, भैया से कहो इस कोठरी में मेरा दम घुटा जा रहा है, जरा आँगन में टहलूँगा ।" छन चुपचाप चला गया । तुरंत ही लौटकर आया और उसने दरवाजा खोल दिया ।

मैं कोठरी में ही बैठा रहा, उठा नहीं । सोच रहा था, ये लोग अब क्या करेंगे ? यह तो जानता था कि मुझे हाथ से निकल नहीं जाने देंगे । इतना तो निश्चित था । भैया आहिस्ता-आहिस्ता कदम रखते एक बुजुर्ग को साथ लिए आ पहुँचे । बुड्ढे की खून की प्यासी आँखों में कटार-सी चमक थी । वह मुझसे आँख नहीं मिलाना चाहता था कि कहीं मैं ताड़ न लूँ, इसलिए गर्दन झुकाए था । चश्मे के भीतर से कनखियों से मेरी ओर देख लेता था ।

"आज तो तुम्हारी तबियत बहुत अच्छी लग रही है," भैया बोले ।

मैंने हामी भरी ।

"तुम्हें दिखाने के लिए ही तो साहब को बुलवाया है", भैया ने कहा ।

''बहुत अच्छा,'' मैंने कहा, पर समझ गया कि यह बुड्ढा असल में एक जल्लाद है, जो हकीम बनकर आया है ! मेरी नब्ज देखने के बहाने वह मुझे टटोलकर मांस का अनुमान लगा रहा था । इस सेवा के लिए उसे भी मेरे मांस का हिस्सा पाने की आशा थी । इस पर भी मैं डरा नहीं । मैं आदमखोर नहीं हूँ, पर उन लोगों से अधिक साहस मुझमें है । मैंने अपनी दोनों कलाइयाँ आगे बढ़ा दीं, यह सोचकर कि देखूँ क्या करता है । बुड्ढा चौकी पर बैठ गया, आँखें मूँदे मेरी नब्ज देखता रहा । कुछ देर सोच में मौन रहा फिर अपनी धूर्त आँखें खोलकर बोला, ''अपने विचारों को भटकने मत दो, फिक्र बिलकुल मत करो । कुछ दिनों तक पूरा आराम करो । चैन से रहो, तुम्हारी सेहत बिलकुल ठीक हो जाएगी ।''

अपने विचारों को भटकने मत दो ! बिलकुल फिक्र मत करो ! कुछ दिन पूरा आराम करो ! चैन से रहो ! हाँ, जब मैं खूब मोटा हो जाऊँगा तो इन्हें खूब मांस मिलेगा । पर मुझे इससे क्या मिलेगा ? यह क्या सेहत का ठीक होना है ? यह इन सब आदमखोरों का नर-मांस के लिए लालच और साथ ही भलमनसाहत का दिखावा है । कायरता के कारण ये लोग तुरंत कार्रवाई करने का साहस नहीं कर पाते – यह देखकर हँसी के मारे पेट में बल पड़ने लगते हैं । मेरी हँसी रुक न सकी और मैं ठहाका लगाकर हँस पड़ा । खूब मजा आया । मैं जानता था कि इस हँसी में निर्भीकता और सत्यनिष्ठा छिपी है । भैया और बूढ़े हकीम के चेहरे पीले पड़ गए । वे लोग मेरी निर्भीकता और सत्यनिष्ठा देखकर डर गए ।

मैं निडर हूँ, साहसी हूँ, इसीलिए तो वे लोग मुझे खा जाने के लिए और अधिक आतुर हैं, ताकि मेरा दमदार कलेजा खाकर उनका हौसला और बढ़ सके । बूढ़ा हकीम उठकर चल दिया । जाते-जाते भैया के कान में कहता गया, ''इसे अभी खाना है !'' भैया ने झुककर हामी भर दी । अब समझ में आया ! विकट रहस्य खुल गया । मन को धक्का तो लगा, पर यह तो होना ही था । मुझे मालूम ही था, मेरा अपना ही भाई मुझे खा डालने के षड्यंत्र में शामिल है !

यह आदमखोर मेरा अपना ही बड़ा भाई है !

मैं एक आदमखोर का छोटा भाई हूँ !

मुझे दूसरे लोग खा जाएँगे, लेकिन फिर भी मैं एक आदमखोर का छोटा भाई हूँ !

5

कुछ दिनों से दूसरी ही बात मन में आ रही है – हो सकता है हकीम के वेश में वह बूढ़ा जल्लाद न हो, हकीम ही हो ; अगर ऐसा भी है तो भी वह आदमखोर तो है ही । वैद्यों के पुरखे ली शी-चन[2] की जड़ी-बूटियों की पोथी में साफ लिखा है कि नर-मांस को उबालकर खाया जा सकता है ; सो वह वैद्य आदमखोर नहीं तो क्या है ?

बड़े भाई का क्या कहना, वे तो आदमखोर हैं ही । जब मुझे पढ़ाते थे तो अपने मुँह से कहते थे, ''लोग अपने बेटों को एक-दूसरे से बदलकर उन्हें खा जाते हैं'' और एक बार एक बदमाश के लिए उन्होंने कहा था कि उसे मार डालने से ही क्या होगा, ''उसका गोश्त खा डालें

और उसकी खाल को बिछावन बना लें !'' तब मेरी उम्र कच्ची थी । सुनकर दिल देर तक ध ड़कता रहा । जब शिशु-भेड़िया गाँव के असामी ने एक बदमाश का कलेजा निकालकर खा जाने की बात कही थी तब भी भैया को कुछ बुरा नहीं लगा था । सुनकर चुपचाप सिर हिलाते रहे थे, जैसे ठीक ही हुआ हो । मुझसे छिपा क्या है, वे तो पहले की ही तरह खूँखार हैं । चूँकि ''बेटों को एक-दूसरे से बदलकर उन्हें खा जाना'' संभव है, तो फिर हर चीज को बदला जा सकता है, हर किसी को खाया जा सकता है । उन दिनों भैया जब ऐसी बातें समझाते थे तो मैं सुन लेता था, सोचता नहीं था । पर अब खूब समझ में आता है कि ऐसी बातें कहते समय उनके मुँह में नर-मांस का स्वाद भर आता होगा और उनका मन मनुष्य को खाने के लिए व्याकुल हो उठता होगा ।

6

घना अँधेरा है । जान नहीं पड़ता रात है या दिन । चाओ परिवार का कुत्ता फिर भौंक रहा है ।

बबरशेर की तरह खूँखार, खरहे की तरह कातर, लोमड़ी की तरह धूर्त ।.....

7

मैं उन लोगों को खूब जानता हूँ । किसी को एकदम मार डालने को ये तैयार नहीं हैं । ऐसा कर सकने का साहस इन लोगों में नहीं है । परिणाम के भय से इनकी जान निकलती है, इसलिए ये लोग षड्यंत्र रचकर जाल बिछा रहे हैं, मुझे आत्महत्या कर लेने के लिए विवश कर रहे हैं । कुछ दिनों से गली के पुरुषों और स्त्रियों का बर्ताव देख रहा हूँ और बड़े भाई का रंग-ढंग भी देख रहा हूँ । मैं सब समझता हूँ । ये लोग तो चाहते हैं कि कोई घर की धन्नी से फंदा लगाकर इनके लिए मर जाए । कत्ल के लिए कोई उन पर उँगली न उठा सके और ये लोग जी भरकर खाएँ । ये लोग इसी बात की कल्पना करके खुशी से फूले नहीं समा रहे । चाहे कोई आदमी चिंता और संकट से सूख-सूख कर आत्महत्या कर ले और उसके शरीर में रक्त-मांस कुछ भी न रहे, ये लोग उसे भी खाने के लिए लालायित रहते हैं ।

ये लोग केवल मुरदार गोश्त खाते हैं ! याद आता है, एक घिनौने जानवर के बारे में पढ़ा है । उसकी आँखें डरावनी होती हैं । हाँ, उसे लकड़बग्घा कहते हैं । लकड़बग्घा अक्सर मुरदार गोश्त खाता है । मोटी-से-मोटी हड्डी दाँतों में चबाकर निगल जाता है । ख्याल आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । लकड़बग्घे की जाति भेड़िए से मिलती है और भेड़िया कुत्ते की जाति का होता है । मालूम होता था वह कुत्ता भी षड्यंत्र में शामिल है । बूढ़ा हकीम नजरें झुकाए था, पर मैं तो ताड़ गया !

सबसे अधिक दुख तो मुझे अपने बड़े भाई के लिए है । वह भी तो आदमी है, उसे डर क्यों नहीं लगता । मुझे खा डालने के लिए वह भी दूसरों के साथ क्यों मिल गया है ! शायद जो

होता चला आया है उसे करते जाने में लोग अपराध और दोष नहीं समझते । या मेरा भाई जानता है कि यह अपराध है, पाप है, पर उसने पाप करने के लिए अपना दिल पत्थर-सा बना लिया है ?

सबसे पहले मैं इसी आदमखोर का भंडाफोड़ करूँगा । सबसे पहले इसी को पाप से रोकूँगा ।

8

वास्तव में तो यह तर्क बहुत पहले ही मान लिया जाना चाहिए था ।.....

अचानक कोई भीतर आ गया । यही बीस-एक वर्ष का नौजवान होगा । चेहरा उसका ठीक-ठीक नहीं देख सका । उस पर मुस्कराहट खेल रही थी । लेकिन जब उसने गर्दन झुकाकर मेरा अभिवादन किया तो उसकी मुस्कराहट बनावटी-सी लगी । मैंने पूछ ही लिया, ''बताओ, नर-मांस खाना उचित है ?''

वह मुस्कराता रहा और बोला, ''क्या कहीं अकाल पड़ा है, नर-मांस कोई क्यों खाएगा ?''

मैं भाँप गया, यह भी उन्हीं के दल का था । मैंने साहस किया और फिर कहा, ''मेरी बात का उत्तर दो !''

''आखिर इस प्रश्न का मतलब क्या है ?..... क्या मजाक कर रहे हो ?..... कितना सुहावना मौसम है !''

''हाँ मौसम अच्छा है, चाँदनी खूब उजली है । पर तुम मेरी बात का जवाब दो, क्या यह उचित है ?''

वह कुछ परेशान हो गया और बोला, ''नहीं ।.....''

''नहीं ? तो फिर लोग ऐसा क्यों करते हैं ?''

''तुम्हारा मतलब क्या है ?''

''मेरा मतलब ? शिशु-भेड़िया गाँव में लोग नर-मांस खा रहे हैं । तुम पोथियाँ-ग्रंथ उठाकर देख लो । सब जगह यही लिखा है, ताजा लाल-लाल अक्षरों में ।''

वह गुमसुम रह गया । उसका चेहरा पीला पड़ गया । मेरी ओर घूरकर बोला, ''होगा, सदा से ही होता आया है ।.....''

''मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता । तुम्हें भी इन फिजूल के झगड़ों में नहीं पड़ना चाहिए । ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए ।''

मैं झट से उछल पड़ा, आँखें फाड़कर इधर-उधर देखने लगा । वह आदमी गायब हो गया था । मैं पसीना-पसीना हो रहा था । नौजवान की उम्र मेरे भाई से बहुत कम थी, मगर वह भी उन लोगों के साथ था । अपने माँ-बाप से सब सीख लिया है उसने, भगवान जाने, अपने बेटे को भी सिखा चुका होगा ! तभी तो ये जरा-जरा से छोकरे मुझे यों घूर-घूर कर देखते हैं ।

9

दूसरों को खा लेने का लालच, परंतु स्वयं आहार बन जाने का भय । सबको दूसरों पर संदेह है, सब दूसरों से आशंकित हैं ।.....

यदि इस परस्पर भय से लोगों को मुक्ति मिल सके तो वे निश्शंक होकर काम कर सकते हैं । बस, मन से वह एक विचार निकाल देने की जरूरत है । परंतु लोग यह कर नहीं पाते और बाप-बेटे, पति-पत्नी, भाई-भाई, मित्र, गुरु-शिष्य, एक-दूसरे के जानी दुश्मन और यहाँ तक कि अपरिचित भी एक-दूसरे को खा जाने के षड्यंत्र में शामिल हैं, दूसरों को भी इसमें घसीट रहे हैं और इस चक्कर से निकल जाने को कोई तैयार नहीं ।

10

आज सुबह बड़े भैया से मिलने गया । वे ड्योढ़ी के सामने खड़े आकाश की ओर ताक रहे थे । मैं उनके पीछे दरवाजे और उनके बीच खड़ा हो गया । बहुत ही विनय से बोला,

''भैया कुछ कहना चाहता हूँ ।''

''हाँ, कहो क्या है ?'' उन्होंने तुरंत मेरी ओर घूमकर सिर हिलाते हुए इजाजत दे दी ।

''बात कुछ खास नहीं है, पर कह नहीं पा रहा हूँ । भैया, आदिम अवस्था में तो शायद सभी लोग थोड़ा-बहुत नर-मांस खा लेते होंगे । जब लोगों का जीवन बदला, उनके विचार बदले, तो उन्होंने नर-मांस त्याग दिया । वे लोग अपना जीवन सुधारना चाहते थे । इसलिए वे सभ्य बन गए, उनमें मानवता आ गई । परंतु कुछ लोग अब भी खाए जा रहे हैं – मगरमच्छों की तरह । कहते हैं जीवों का विकास होता है, एक जीव से दूसरा जीव बन जाता है । कुछ जीव विकास करके मछली बन गए हैं, पक्षी बन गए हैं, बंदर बन गए हैं । ऐसे ही आदमी भी बन गया है । परंतु कुछ जीवों में विकास की इच्छा नहीं होती । उनका विकास नहीं होता, वे सुधरते ही नहीं, रेंगने वाले जानवर ही बने रहते हैं । नर-मांस खाने वाले असभ्य लोग नर-मांस न खाने वाले मनुष्यों की तुलना में कितना नीचे और लज्जित अनुभव करते होंगे । बंदर की तुलना में रेंगने वाले जानवर नीचे हैं, परंतु नर-मांस न खाने वाले सभ्य लोगों की तुलना में नर-मांस खाने वाले लोग उनसे भी नीचे हैं ।

''पुराने समय में ई या ने अपने बेटे को उबालकर च्ये और चओ के सामने परोस दिया था । यह एक पुरानी कहानी है ।[3] इससे पहले भी जिस दिन से फान कू ने आकाश और पृथ्वी बनाए हैं, ई या के बेटे के जमाने से श्वी शी-लिन के जमाने तक[4] मनुष्य एक-दूसरे को खाते रहे हैं । श्वी शी-लिन के जमाने से शिशु-भेड़िया गाँव में पकड़े गए आदमी के जमाने तक यही होता रहा है । पिछले साल शहर में एक अपराधी की गर्दन काट दी गई थी । खून बहता देखकर तपेदिक के एक मरीज ने उसके खून में रोटी डुबोकर खा ली थी ।

''ये लोग मुझे खाना चाहते हैं । इन सब लोगों को अकेले रोक पाना तुम्हारे बस का नहीं ;

पर तुम उनमें क्यों मिल गए हो ? ये लोग आदमखोर ठहरे, जो न कर डालें ! ये मुझे खा डालेंगे, उसके बाद तुम्हारी भी बारी आएगी । फिर ये लोग आपस में भी एक-दूसरे को नहीं छोड़ेंगे । भैया, अगर तुम लोग आज ही यह रास्ता छोड़ दो तो सबको चैन मिल जाएगा । माना, बहुत-बहुत पुराने समय से ऐसा ही होता चला आया है, आदमी आदमी को खाता आया है । पर, अब खासकर इस समय में तो हम लोग आपस में एक-दूसरे पर दया कर सकते हैं और कह सकते हैं कि ऐसा नहीं होगा ! भैया मुझे विश्वास है कि तुम ऐसा कहोगे । अभी उस दिन वह असामी लगान घटा देने के लिए कह रहा था । तब भी तुमने कह दिया था, ऐसा नहीं हो सकता ।''

भैया पहले तो बेपरवाही दिखाने को मुस्कराते रहे, फिर उनकी आँखों में खून उतर आया और जब मैंने उनका भंडाफोड़ कर दिया तो उनका चेहरा पीला पड़ गया । ड्योढ़ी के बाहर कई लोग जमा थे । चाओ साहब भी अपना कुत्ता लिए खड़े थे । सब लोग गर्दनें बढ़ा-बढ़ा कर बड़ी उत्सुकता से भीतर झाँक रहे थे । मैं उनके चेहरे नहीं देख पा रहा था । लगता था कई लोग कपड़े से चेहरा छिपाए हैं । कुछ के चेहरे जर्द और डरावने लग रहे थे, कुछ अपनी हँसी दबाए थे । मैं जानता था वे सब आदमखोर हैं, आपस में मिले हुए हैं । पर उनमें आपस में एका और मेल कहाँ था । कुछ का ख्याल था कि आदमखोरी सदा से होती आई है और यह कोई बुरी बात नहीं । कुछ मानते थे कि यह अत्याचार है, पर अपना लालच दबा नहीं पाते थे । चाहते थे कि उनका भेद न खुले । इसलिए मेरी बात सुनी तो उन्हें गुस्सा आ गया । पर अपने गुस्से को काबू कर वे होंठ दबाए मुस्कराते रहे ।

भैया एकदम ताव में आ गए और जोर से चिल्ला उठे – ''चलो यहाँ से, भाग जाओ सब लोग ! किसी का दिमाग खराब हो गया है और तुम उसका तमाशा देखने आए हो !''

मैं उन लोगों की चाल भाँपने लगा था । ये लोग अपनी राह से टलने वाले नहीं, इन लोगों ने पूरा षड्यंत्र रच लिया है । सबने मिलकर मुझे पागल समझ लिया है । ये लोग मुझे खत्म कर देंगे तो कोई कुछ कहेगा भी नहीं । सब यही समझेंगे कि पगला था, उसे निबटा दिया । ठीक किया । शिशु-भेड़िया गाँव के असामी ने एक बदमाश को मारकर खा जाने की बात कही थी, तब भी किसी ने कुछ नहीं कहा था । तब भी इन लोगों ने यही चाल चली थी । यह इन लोगों की एक पुरानी चाल है ।https://www.evidyarthi.in/

छन भी भीतर चला आया । वह भी बहुत गरम हो रहा था, पर वे लोग मेरा मुँह बंद नहीं कर सके । मैं बोले बिना नहीं माना – ''यह ठीक नहीं है, ऐसा मत करो । तुम्हें अपना मन बदलना होगा'' मैंने कहा, ''समझ लो यह अन्याय नहीं चल सकेगा । भविष्य में दुनिया में आदमखोरी नहीं चल सकेगी ।

अगर आदमखोरी नहीं छोड़ोगे तो तुम सब खत्म हो जाओगे, एक-दूसरे को खा जाओगे । तुम्हारे घरों में चाहे जितनी संतानें पैदा हों, सभ्य लोग तुम्हें समाप्त कर देंगे । जैसे शिकारी जंगल में भेड़ियों को समाप्त कर देते हैं, जैसे लोग साँपों को खत्म कर देते हैं ।''

छन दादा ने सब लोगों को भगा दिया । भैया चले गए थे । छन ने मुझे अपने कमरे में जाने को कहा । कमरे में घुप्प अँधेरा था । सिर के ऊपर छत की धन्नियाँ और कड़ियाँ थिरकती जान पड़ रही थीं । उनका आकार बढ़ता जा रहा था । कुछ पल ऐसे ही खड़खड़ाहट होती रही । फिर छत मुझ पर आ गिरी ।

छत के बोझ के नीचे हिल सकना संभव नहीं था । वे लोग तो चाहते ही थे कि मैं मर जाऊँ । मैं जानता था कि यह बोझ महज ख्याली ही है । इसलिए हिम्मत बाँधी, कंधा लगाया और बाहर निकल आया ! मैं पसीना-पसीना हो रहा था, परंतु फिर भी बोले बिना नहीं रह सका – "तुम्हें तुरंत बदलना होगा ! अपना मन बदलना होगा ! याद रखो, भविष्य में दुनिया में आदमखोरी नहीं चल सकेगी ।"

11

कोठरी का दरवाजा बंद रहता है । कभी धूप नहीं दिखाई देती । रोजाना दो बार खाना मिल जाता है ।

मैंने खाना खाने को चापस्टिकें उठाईं तो भैया का ख्याल आ गया, अपनी छोटी बहन की मृत्यु की घटना याद आ गई । वह भैया की ही करतूत थी । तब मेरी बहन केवल पाँच वर्ष की थी । कितनी प्यारी और निरीह थी वह ! याद आती है तो चेहरा आँखों के सामने घूम जाता है । माँ रो-रो कर बेहाल हो रही थीं । भैया माँ को सांत्वना देकर समझा रहे थे, कारण शायद यह था कि स्वयं ही बेचारी को खा गए थे इसलिए माँ को इस तरह रोते देखकर उन्हें शर्म आ रही थी । अगर उनमें शर्म होती.....

भैया मेरी बहन को खा गए थे ! नहीं मालूम माँ यह भेद जान सकी थीं या नहीं ।

मेरा तो ख्याल है कि माँ सब जानती थीं, पर जब माँ रो रही थीं तो उन्होंने साफ-साफ कुछ भी नहीं कहा था । शायद यह सोचकर चुप रही थीं कि कहने की बात नहीं थी । एक घटना और याद है । तब मेरी उम्र चार या पाँच वर्ष रही होगी । मैं आँगन में छाँह में बैठा हुआ था । भैया ने कहा था – एक सपूत का कर्त्तव्य है कि अपने माता-पिता के बीमार होने पर उनकी औषधि के लिए यदि जरूरत हो तो अपने शरीर का मांस भी काटकर और उबालकर प्रस्तुत कर दे । माँ उनकी बात सुनकर समर्थन में चुप रह गई थीं, उन्होंने कोई विरोध नहीं किया था । अगर नर-मांस का एक टुकड़ा खाया जा सकता है तो पूरे आदमी को भी खाया जा सकता है । और जब माँ के शोक और रुदन की याद आती है तो कलेजा टुकड़े-टुकड़े होने लगता है । कितने निराले ढंग हैं इन लोगों के !

12

उसे याद करते ही, सोचते ही, रोंगटे खड़े हो जाते हैं । सिर चकरा जाता है ।

आखिर यह बात समझ में आई कि उम्रभर से ऐसे लोगों के बीच रह रहा हूँ जो चार हजार

वर्षों से नर-मांस का आहार करते आ रहे हैं । बड़े भैया ने अभी घर सँभाला था कि कुछ दिन बाद छोटी बहन की मृत्यु हो गई । इन्होंने उसके मांस का उपयोग किया ही होगा, पुलाव में या दूसरी तरह । बेखबरी में हम लोग भी खा गए होंगे ।

संभव है, अनजाने में मैंने अपनी बहन के मांस के टुकड़े खा लिए लिए हों, और अब मेरी बारी आई है ।.....

मैं भले ही बेखबर रहा हूँ, मेरे पुरखे चार हजार वर्ष से आदमखोर रहे हैं । मेरे जैसा आदमी किसी सभ्य, वास्तविक मानव को अपना मुँह कैसे दिखा सकता है ?

13

संभव है नई पीढ़ी के छोटे बच्चों ने अभी नर-मांस न खाया हो । इन बच्चों को तो बचा लें ! .....

❑❑❑

शब्द-संदर्भ

1. कू च्यू का अर्थ है 'प्राचीन काल' । लू शुन का संकेत यहाँ चीन में सामंती उत्पीड़न के दीर्घकालीन इतिहास की तरफ है ।
2. एक प्रसिद्ध चीनी औषधि वैज्ञानिक (1518-1593) जिन्होंने 'पनछाओकाङमू' नामक औषधि ग्रंथ की रचना की थी ।
3. प्राचीन अभिलेखों के अनुसार ई या ने अपने बेटे का गोश्त छी राज्य के राजा ह्वान को, जिसने ईसा पूर्व 685 से 643 तक शासन किया, परोस दिया था । च्ये और चओ पहले के जमाने के निरंकुश शासक थे । यहाँ पागल आदमी ने गलती से उनका उल्लेख कर दिया है ।
4. छिङ राजवंश (1644-1911) के अंतिम काल में एक क्रांतिकारी खीशी-लिन को 1907 में एक छिङ अफसर की हत्या के आरोप में मौत की सजा दी गई थी । उनके दिल और जिगर का गोश्त खाया गया था ।

माँ की बाँहों में : वांग दतोंग